अदभुत रस

अदभुत रस का स्थायी भाव आश्चर्य होता है। जब किसी जीव के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि का भाव उत्पन्न होता है , उसे अद्भुत रस कहा जाता है।

अथवा

जब विस्मय नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव संचारी भाव् आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब अद्भुद रस की निष्पत्ति होती है|

उदाहरण -

अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु।
चकित भई गद्गगद बचन, विकसित दृग पुलकातु।।

इहाँ उहाँ हुई बालक देखा ।
मति भ्रम मोर कि अवनि विशेषा।

देख यशोदा शिशु के मुख में,
सकल विश्व की माया ।
क्षण भर को वह बनी अचेतन,
हिल न सकी कोमल काया।।

बिनु पग चलै सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।